



AF-2040

B.A. Regular (Part - I)
Term End Examination, 2017-18

Paper - II

Sanskrit Literature

Time : Three Hours] [*Maximum Marks* : 75

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर सुवाच्य अक्षरों में दीजिए।

इकाई - I

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए : 20

(क) यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालनं निर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितं धवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कं पत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरति दूरम् आत्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः।

(2)

- (ख) न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते,। न रूपमालोकयते। नकुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति। न वैदग्ध्यं गणयति। न क्षुतमाकर्णयति। न धर्ममनुरुध्यते। न त्यागमाद्रियते। न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति। न सत्यमवबुध्यते। न लक्षणं प्रमाणी करोति। गन्धर्व नगरलेखेव पश्यत एव नश्यति।
- (ग) सप्तच्छद तरव इव कुसुमरजोविकारैरासन्नवर्तिनां शिरः शूलमुत्पादयन्ति। आसन्न मृत्यव इव बन्धुजनमपि नाभिजानन्ति। उत्कुपित लोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते। कालदष्टा इव महामन्त्रेरपि न प्रतिबुध्यते। जातुषाभरणानीव सोष्माणं न सहन्ते।

इकाई - II

2. अधोलिखित श्लोकों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 20
- (क) अनेक संशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्धएव सः ॥
- (ख) इज्याध्ययनदानानि, तपः सत्यं धृतिः क्षमा।
अलोभ इति भार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः ॥
- (ग) परोक्षे कार्यहन्तारं, प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत् तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥

(3)

- (घ) निदानमिव मण्डूकाः सरः पूर्णमिवाण्डजाः ।
सोद्योगंनरमायान्ति विवशाः सर्वसम्पदः ॥

इकाई - III

3. (क) शुकनासोपदेश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। 5

अथवा

बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्—इस कथन का भावार्थ लिखिए।

- (ख) चित्रग्रीव कपोत तथा हिरण्यक चूहे की कहानी अपने शब्दों में लिखिए। 5

अथवा

हितोपदेश की कथा की महत्ता पर प्रकाश डालिए।

इकाई - IV

4. संस्कृत नाटक की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 15

अथवा

किन्हीं दो कथाग्रन्थों का सम्यक् परिचय दीजिए।

(4)

इकाई - V

5. महाकवि कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए। 10

अथवा

किन्हीं दो का परिचय दीजिए :

- (क) शिवराजविजयम्
 - (ख) महाकवि माघ
 - (ग) नैषधीय चरितम्
 - (घ) किरातार्जुनीयम्
- _____